International Journal of Applied Research 2023; 9(1): 457-459

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 457-459
www.allresearchjournal.com
Received: 29-11-2022
Accepted: 02-01-2023

सुशील कुमार
नेट (इतिहास), वास्तु बिहार, के० 23, रोड नं० 3, चक्का, पोस्ट – लालसाहपुर, मब्बी ओपी दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुशील कुमार
नेट (इतिहास), वास्तु बिहार, के० 23, रोड नं० 3, चक्का, पोस्ट – लालसाहपुर, मब्बी ओपी दरभंगा, बिहार, भारत

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तरी बिहार की महिलाओं का योगदान

सुशील कुमार

प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि प्रागैतिहासिक काल से ही स्त्रियों पुरुषों के साथ सहयोग करती आ रही हैं। विशेषकर भारत में जब सामाजिक पुनर्जागरण से प्रगतिशील विचारधारा जोड़ पकड़ने लगी तब स्त्रियों ने अपनी महत्ता को पहचानना शुरू किया। सुभद्रा कुमारी चौहान ने ''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली सी थी'' लिखकर स्त्री जाति को यह एहसास दिलाया कि वह साहस और शौर्य में पुरुषों से कम नहीं हैं। खासकर स्त्रियों में 1885 ई० के राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के बाद का भी जागृति आयी और उन्होंने भी धीरे–धीरे राजनीतिक रंगमंच पर आना शरू कर दिया।

''सम्पूर्ण महान कार्य के प्रारम्भ में किसी न किसी स्त्री का हाथ रहा है।'' लार्मिटन का यह कथन स्वाधीनता के संग्राम में उत्तरी बिहार की महिलाओं के सन्दर्भ में बड़ा ही सटीक लगता है। सदियों की गुलामी से मुक्ति के लिए जो आन्दोलन चला उसमें न केवल पुरुषों का ही योगदान था बल्कि महिलाओं ने भी खुलकर साथ दिया। सारा देश इन कोमलांगिनी ललताओं का कायल हैं, जिनके अमर बलिदानों को वह इतिहास, जो कभी मरता नहीं, अपने अमर पन्नों में समेटे हुए हैं। उन महान् स्त्रियों की भूमिका को कभी नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने इस भव्य भारत–मन्दिर के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य किया।

महात्मा गाँधी के ''करो या मरो'' के नारा के साथ 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का श्री गणेश हुआ। सरकार ने रातोंरात देश के तमाम शीर्ष नेताओं को जेल की सलाखों में डाल दिया। पूरे देश में क्रांति की लहर दौड़ चली, जिसमें स्त्रियों ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया। अंग्रेजी हुकूमत का क्रूर चक्र शुरू हुआ फिर भी स्त्रियाँ तनिक भी विचलित नहीं हुई। बिहार ने अपने गौरव के अनुकूल आजादी की लड़ाई में भाग लिया और यहां की स्त्रियों ने यह सिद्ध कर दिया कि वे देश के अन्य किसी राज्य की स्त्रियों से कम नहीं हैं।

यह बात दूसरी है कि अभी हमें उत्तरी बिहार की प्रमुख महिलाओं के योगदान की जानकारी नहीं है। परन्तु यह तो अक्षरसः सत्य है कि उत्तरी बिहार की ललनाओं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति दी है।

राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेने की महिलाओं से गाँधीजी की अपील

सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करते समय गाँधीजी ने भारत की महिलाओं के नाम एक खुली चिट्ठी में उनसे विदेशी वस्त्र एवं नशीले पदार्थों के बहिष्कार सम्बन्धी कार्यों में भाग लेकर राष्ट्रीय संग्राम मेंसहायता देने की अपील की थी। उन्होंने महिलाओं से अपनी अपील में कहा था कि विदेशी दल का बहिष्कार हस्त–निर्मित वस्त्र के उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि करके प्रभावी बनाया जा सकता था। इस काम में स्त्रियाँ (सूत कातने में) अपना बचा हुआ समय लगाकर बहुत सहायता कर सकती थीं। इन दोनों बहिष्कार कार्यों के लिये प्रचार के सन्दर्भ में गाँधीजी ने उनसे कहा था कि 'विदेशी वस्त्र विक्रेताओं तथा क्रेताओं एवं शराब पीनेवालों एवं बेचनेवालों से उनकी अपील उनका हृदय पिघलाए बिना नहीं रह सकती थीं।' अपनी अपील के अन्त में गाँधीजी ने कहा कि यह असम्भव नहीं कि इस सिलसिले में उन्हें अपमानित किया जाय। किन्तु ऐसा अपमान सहना भी उनके लिए गौरव की बात होगी। यदि ऐसा हुआ तो इससे देश की अग्नि–परीक्षा जल्दी खत्म होगी।

बिहार में अनेक महिलाएँ पर्दा से बाहर आई और गाँधीजी की अपील का सोत्साह उत्तर दिया। विशेष करके पटना में विदेशी वस्त्र बहिष्कार को जो सफलता मिली उसका श्रेय अधिकतर महिलाओं को था। श्रीमती हसन इमाम के नेतृत्व में कुछ स्त्रियाँ घटना की सड़कों पर घूम एवं दूकानदारों से विदेशी वस्त्र का व्यापार नहीं करने की अपील की।

श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी ने भी इसमें प्रमुख भाग लिया। इस शंका से कि स्त्रियाँ नशीले द्रव्यों की दूकान पर धरना देने में भाग लेंगी, पटना सिटी के मैजिस्ट्रट ने 'महिला पुलिस नियुक्त करने' का सुझाव दिया। जिलाधिकारी एवं आयुक्त को यह सुझाव व्यावहारिक नहीं प्रतीत हुआ। सहसराम में श्री रामबहादुर बार–ऐट–लॉ की पत्नी ने कुछ अन्य महिलाओं के साथ स्थानीय थाना के सामने एक छटाँक नमक बनाया।

कुछ दिनों से बिहार की शिक्षित महिलाओं में जागरण का आसार दीख पड़ रहा था। जनवरी, 1929 में पटना में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का एक अधिवेशन हुआ। इसमें बिहार की महिलाओं को देश के अलग भागों की महिलाओं से मिलने का अवसर मिला और देश की स्वतंत्रता एवं महिला समाज में जो कुरीतियाँ फैली हुई थीं उन्हें दूर करने के तरीकों पर विचार–विमर्श किया गया। बिहार में सम्मेलन की एक शाखा का संगठन किया गया। इसका एक अधिवेशन 7 दिसम्बर, 1929 को हुआ। उससे शारदा ऐक्ट के समर्थन तथा पर्दा प्रथा एवं दहेज प्रथा के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। प्रान्त में नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान देने के लिए जोर दिया गया। बिहार से कुछ महिला प्रतिनिधियों ने 20 जनवरी, 1930 को बम्बई में सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधारों के हेतु अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लिया। बिहार महिला सम्मेलन का चौथा सम्मेलन गया के थियोसोफिकल हॉल में 4 दिसम्बर, 1930 को श्री नन्दकिशोर लाल की पत्नी की अध्यक्षता में हुआ। बिहार के लिए स्थाई समिति की सदस्य श्रीमती कमलकामिनी देवी ने पिछले वर्ष के कार्यों की एक रिपोर्ट पढ़ी और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिए कुछ प्रतिनिधियों का निर्वाचन किया गया।

बिहार की अग्रणी महिलाओं में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की बहन भगवती देवी, उनकी पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी, लाल बहादुर शास्त्री की बहन एवं शंभुशरण वर्मा की पत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण की पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती सुमित्रा देवी, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, अनुसूईया जयसवाल, श्रीमती शांति ओझा, श्रीमती लीला सिंह, श्रीमती राम स्वरूप देवी, श्रीमती राम प्यारी देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी, श्रीमती शारदा कुमारी, श्रीमती प्रियंवदा देवी, श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती भवानी मल्होत्रा, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन स्त्रियों के योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि उन्होंने बिहार के महिला वर्ग में जागृति लाने को निरंतर प्रयास किया। उनकी प्रेरणा से ही अनेक स्त्रियों ने जंगे आजादी में भाग लिया, जेल गयीं और अपने प्राणों तक को न्योछावर कर डाला।

19वीं सदी के अनेक लेखों एवं कागजातों से पता चलता है कि भोजपुर के जगदीशपुर, पीरो, बीबीगंज और आरा की अनेक महिलाओं ने गुप्त रूप से 1857 के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कुंवर सिंह की सेना की काफी मदद की थी। आरा की करमन बाई और धरमन बाई तथा नर्तकी गुलाबी ने बाबू कुंवर सिंह की हर तरह से मदद की थी। यह आन्दोलन दबा दिया गया, पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। शाहाबाद की नर्तकी गुलाबी झनक झनक पायल बाजे का सरगम ही नहीं सुनाती थी, बल्कि तलवार की खनक भी सुनाती थी। यह बिहार के सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी कुंवर सिंह की प्रेयसी थी। एक बार बाबू कुंवर सिंह को बचाने में इसे गोली लग गयी और यह शहीद हो गयी। अपनी शहीद गुलाबी की स्मृति में बाबू कुंवर सिंह ने आरा में एक मस्जिद बनवायी थी।

1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। चम्पारण सत्याग्रह के सिलसिले में गाँधी जी का पदार्पण बिहार में सन् 1917 में हुआ। इसमें महात्मा गाँधी के आह्वान पर बिहार के छात्रों के साथ–साथ कुछ छात्राओं ने भी कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी। दिघवारा प्रखण्ड के मलखाचक गाँव के अनेक लड़के और लड़कियों ने इस आन्दोलन में भाग लिया। गाँधी जी की मान्यता थी कि स्वराज्य की विजय में भारत की स्त्रियों का उतना ही हिस्सा होना चाहिए जितना पुरुषों का शुद्ध भावना से स्त्रियाँ कार्य कर पहाड़ों को भी हिला दे सकती हैं, ऐसे वे मानते थे। बापू कहते थे कि जब पुरुष जेलों में होंगे तो स्त्रियाँ ही उनके द्वारा छोड़े गए कामों को बड़ी खूबसूरती के साथ पूरा करेंगी। गाँधीजी का कहना था कि लोगों को समझाने बुझाने का कार्य स्त्री, पुरुष से बेहतर कर सकती है, क्योंकि उसमें अहिंसा की प्रवृति ज्यादा है। इसलिए उन्होंने स्वराज की प्राप्ति के लिए महिलाओं को आगे आने को कहा था।

राजनीति में महिलाओं का आह्वान करते हुए गाँधीजी ने कहा था– आजकल बहनें राजनीति में कम हिस्सा लेती हैं। और जो लेती हैं उनमें से अधिकांश स्वतंत्र विचार नहीं रखती, जैसा माता पिता या पति कहते हैं, वैसा करती हैं और अपनी पराधीनता महसूस करके स्त्रियों के अधिकार को नजरअंदाज कर देती हैं। इसके बदले स्त्री कार्यकर्त्तियों, तमाम बहनों के नाम मतदाताओं की सूची में दर्ज करा दें, उनको व्यावहारिक शिक्षा दें, उन्हें स्वतंत्र रीति से विचार करना सिखायें, उन्हें जात–पात की जंजीरों से छुड़ाएं और ऐसी हालत पैदा कर दें जिससे पुरुष ही उनकी शक्ति और उनके त्याग को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ाएँ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में इसके प्रारम्भ काल से ही महिलाओं का थोड़ा–बहुत योगदान रहा है, किन्तु ये अनुपात में कम थीं। 1889 में बिहार के स्वराज्य कुमारी देवी तथा कादम्बिनी गांगुली के साथ 10 महिलाओं ने बम्बई कांग्रेस में भाग लिया था। 1890 में कादम्बिनी गांगुली प्रथम महिला थीं जिसने कांग्रेस के मंच से भाषण किया था। उन दिनों प्रमुख कांग्रेसी कार्यकताओं की पत्नियाँ अपने पति के साथ जाती तो थीं, लेकिन, उनका कोई सक्रिय योगदान राजनीति में नहीं होता था और न ही उनके कोई विचार ही लिए जाते थे।

1919 में अखिल भारतीय कांग्रेस के 34वें सम्मेलन में बिहार के प्रतिनिधिमंडल में श्रीमती सैयद हसन इमाम तथा बेगम रहमान गयी थीं। उन दिनों बिहार में कांग्रेस संगठन के कार्यों में श्रीमती इमाम जैसी एक–दो हीं महिलाएँ थीं। किन्तु बिहारी महिलाएँ भी गाँधी जी के व्यक्तित्व की ओर आकर्षित हो रही थीं और उनके आह्वान पर अपनी भागीदारी निभानी शुरू कर दी थीं।

1921 में सरला देवी चौधरी ने कांग्रेस संगठन के लिए अथक प्रयास किया। 1921 ई० के नवम्बर माह में जब ब्रिटिश राजकुमार भारत आने वाले थे तो कांग्रेस ने हड़तालों से उनके स्वागत करने का निश्चय किया। फलतः 17 नवम्बर को जब राजकुमार बम्बई उतरे, तब समस्त बम्बई में हड़ताल हो गई। सरला देवी ने घूम–घूमकर राजकुमार के स्वागत में किये गये समारोहों के बहिष्कार करने की बातें की। 6 अक्टूबर को हजारीबाग में बिहार विद्यार्थी परिषद का 16वां अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सरला देवी ने की। इस सभा में भी राजकुमार के स्वागत में किए गये समारोहों के बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। 9 अक्टूबर को गिरिडीह और पंचमा में उन्होंने महिलाओं को कांग्रेस के कार्य में हाथ बटाने का आह्वान किया। इसी क्रम में छोटानागपुर का भ्रमण कर उन्होंने खादी का खूब प्रचार किया। पटना में सावित्री देवी, सी० सी० दास की पत्नी तथा उर्मिला देवी ने महिलाओं में जागरण का मंत्र फूंका। इस क्रम में वे प्रचार के लिए मुंगेर गई। वहाँ कई सभाओं को संबोधित किया। फिर कांग्रेस के कार्यक्रमों को लेकर झरिया का सघन दौरा किया। फलतः 22 दिसम्बर को जब राजकुमार पटना आये, तब शहर में हड़ताल रही। कितने वकील भी कचहरी नहीं गये। कांग्रेस में सावित्री देवी को इस प्रोपगंडा कार्य के लिए तीन महीने की कैद की सजा हुई।

भागलपुर की लीला सिंह भी कांग्रेस के संगठन के कार्य में सक्रिय रहीं। मुजफ्फरपुर में उनहोंने कांग्रेस के कार्यक्रमों में महिलाओं को आगे आने का आहवान किया। वे कौमी सेवा दल

की भी अध्यक्षा थीं। तत्पश्चात् बिहार प्रान्तीय कांग्रेस का कोषाध्यक्ष भी बनीं। 1921 के अखिल भारतीय कांग्रेस के छतीसवें अहमदाबाद सम्मेदल में बिहार के प्रतिनिधिमंडल में पाँच महिलाओं ने भाग लिया था, ये थीं श्रीमती लाला दौलत राम, जानकी देवी, गुलाबन देवी, हरमति देवी, महादेवी तथा लीला सिंह।

मुजफ्फरपुर में श्रीमती शफी तथा शारदा कुमारी देवी तथा कुछ हिन्दू एवं मुस्लिम परिवार की समस्त महिलाओं ने भी आजादी की लड़ाई के कार्यक्रमों में भाग लिया। श्रीमती शफी ने तो इस क्रम में सघन दौरा किया था। उन्होंने हायाघाट के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में जान ला दी थी। छपरा की श्रीमती कृष्णा कुमारी देवी ने भी घूमघूकर कई स्थानों पर कांग्रेस संगठन का कार्य किया। इसी क्रम में उन्होंने बाढ़ और बेगूसराय आदि स्थानों पर भ्रमण किया था। सिवान की श्रीमती सदयुग प्रसाद प्रभावित होकर स्वयंसेविका बनी थीं।

असहयोग आन्दोलन के दौरान बिहार में शहरी एवं ग्रामीण, सभी क्षेत्रों की महिलाएँ सक्रिय थीं। 1922 के आसपास हाजीपुर अनुमण्डल का ग्रामीण इलाका पूरे देश में सबसे आगे रहा। इस इलाके में घटारो गाँव की स्त्रियाँ आन्दोलन में काफी सक्रिय रहीं। इस अनुमण्डल में श्री किशोरी प्रसन्न सिंह की पत्नी सुनीति देवी, श्री कुशेश्वर सिंह की पत्नी विन्दा देवी, श्री कपिलदेव सिंह की माँ और श्रीमती रामसखी देवी घटारो की थीं। इन्होंने आन्दोलन में खुलकर भाग लियां। सत्यभाभा देवी, सीता देवी, श्री रामबहादूर सिंह की पत्नी एवं माँ इसी अनुमण्डल की थीं। जेल से छूटने के बाद गाँधी जी इन महिलाओं से मिलने स्वयं आये थे।

असहयोग आन्दोन के दिनों में महिलाओं की भागीदारी बहुत ही कम थी। कुछ महिलाओं में माधुरी तथा उर्मिला देवी का नाम आता है। उर्मिला देवी ने तो 1922 के कांग्रेस अधिवेशन में महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की थी। विध्यवासिनी देवी ने गया कांग्रेस में स्वयंसेविका दल संगठित कर अपनी दक्षता का परिचय देते हुए नेतृत्व किया था। रामतनुक देवी स्वयंसेविका के रूप में गया कांग्रेस में कार्य करने गयी थीं। 1922 में ही भागलपुर क्षेत्र में दीप नारायण सिंह की पत्नी श्रमती लीला सिंह अपने पति के साथ सक्रिय योगदान दे रही थीं। प्रमुख कांग्रेसी नेता महेन्द्र सिंह की पत्नी रामझरी देवी 1926 के गौहाटी अधिवेशन से 1929 के लाहौर कांग्रेस, 1931 के करांची अधिवेशन तथा 1934 के बम्बई सम्मेलन में अपने पति के साथ नियमित रूप से जाती रहीं।

जनवरी 1929 में पटना में अखिल भारतीय सम्मेलन का एक अधिवेशन हुआ। इसमें उत्तरी बिहार की महिलाओं को देश के अन्य भागों की महिलाओं से मिलने का अवसर मिला। देश की स्वतंत्रता एवं महिला समाज में जो कुरीतियाँ फैली हुई थी उन्हें दूर करने के तरीकों पर विचार–विमर्श किया गया। इसका एक अधिवेशन 7 दिसम्बर 1929 को हुआ। उसमें शारदा ऐक्ट के समर्थन तथा पर्दा एवं दहेज प्रथा के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। प्रस्ताव में नारी शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया।

श्रीमती चन्द्रावती देवी ने 1929 में बेतिया में कांग्रेस संगठन को मजबूत करने में अहम् भूमिका निभाई थी और वहाँ स्थानीय कांग्रेस कमिटी की उपसभापति चुनी गई थीं। 1929 में कांग्रेस के कार्यक्रमों में पटना में श्रीमती माधुरी देवी तथा श्रीमती पी० पी० वर्मा ने खुलकर भाग लिया। बिहार में कुछ महिला प्रतिनिधियों ने 20 जनवरी 1930 को बम्बई में सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधारों हेतु अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लिया। बिहार महिला सम्मेलन का चौथा सम्मेलन गया के थियोसॉफिकल हॉल में 4 दिसम्बर 1930 को हुआ।

4 मई, 1930 ई० को जब महात्मा गाँधी गिरफ्तार कर लिए गये तब उसके विरोध में जगह–जगह हड़ताल तथा प्रदर्शन हुए और सभाओं में विदेशी, वस्त्रों, विशेषकर ब्रिटिश वस्त्रों के बहिष्कार, अदालतों के बहिष्कार तथा शराब की दुकानों पर धरना देने के प्रस्ताव पारित किए गये। 9 मई, 1930 ई० को बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी ने सभी सहायक समितियों को यह आदेश दिया कि 16 मई से विदेशी वस्त्रों तथा शराब की दुकानों पर धरना दिया जाए।

राष्ट्रीयता की भावना बिहार में इस प्रकार लोगों के मन में भर चुकी थी कि कमी भी आन्दोलन चलाने के लिये स्वयंसेवकों का अभाव नहीं होता। हर तरह के कष्ट सहन करते हुए लोग हमेशा पर्याप्त संख्या में उपलब्ध रहते। इस प्रकार स्वाधीनता संग्राम में उत्तरी बिहार की अनेक महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन्दर्भ

1. अमरेन्द्र कुमार, स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएँ, हिन्दुस्तान, दिनांक, 15.8.97 पृ० 17.
2. तथैव, पृ० 23
3. तथैव, पृ० 28
4. दत्त, के० के०, बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, खण्ड – 3, पृ० 33.
5. तथैव, पृ० 48
6. बिहार की महिलाएँ, स० शिवपूजन सहाय, पृ० 332.
7. तथैव, पृ० 204
8. झा, दिगम्बर (प्र० सं०) – (1971), बिहार का खादी आन्दोलन और उसका विका, पृ० 32